International Journal of Applied Research 2017; 3(3): 435-438

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2017; 3(3): 435-438
www.allresearchjournal.com
Received: 21-01-2017
Accepted: 22-02-2017

**डिम्पल रेड्डी**
पीएच–डी शोधकता, मैट्स यूनिवर्सिटी आरंग रायपुर, छत्तीसगढ, भारत

**डॉ. संजीत कुमार तिवारी**
निर्देशक, सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग) मैट्स यूनिवर्सिटी, आरंग रायपुर

**Correspondence**
**डॉ. संजीत कुमार तिवारी**
निर्देशक, सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग) मैट्स यूनिवर्सिटी, आरंग रायपुर, छत्तीसगढ, भारत

# रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

## डिम्पल रेड्डी, डॉ. संजीत कुमार तिवारी

**सारांश**
प्रस्तुत शोध अध्ययन में रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु रायपुर जिले के 30 स्कूल का चयन किया गया है। जिसमें 15 शासकीय और 15 आशासकीय विद्यालय शामिल है। 15 शासकीय स्कूल के 20–25 विद्यार्थी 15 आशासकीय स्कूल के 20 –25 विद्यार्थी कुल 1000 विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के आँकड़ों के संकलन के लिए प्रवीण कुमार झा एवं आरपी श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मापनी का चयन किया गया है। प्राप्त प्रदतों के विश्लेषण के लिए टी परिक्षण का प्रयोग किया गया एवं निष्कर्ष में पाया गया की उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालय के छात्र छात्रों के पर्यावरण जागरुकता का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर पड़ने वाले प्रभाव के बीच अंतर नहीं पाया गया ।

**मूल शब्द:** पर्यावरण जागरुकता, सामाजिक परिपक्वता उच्चतर माध्यमिक स्कूल, शासकीय स्कूल, आशासकीय स्कूल

## प्रस्तावना

### भूमिका

मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा की मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाती है। जन्म के समय बालक का आचरण पशु के समान रहता है। वह अपनी मूल प्रवृत्ति से प्रेरित होकर आचरण करता है। वह आधर निद्रा भय से ग्रस्त रहता है तथा वह पशुवत व्यवहार करता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक का सर्वांगीण विकास होता है। इसलिए शिक्षा केवल विद्यालय तक ही सीमित नहीं रहती है। बल्कि संपूर्ण जीवन को स्पष्ट करती है।

शिक्षा के आधुनिक आयाम जीवन जगत से जुड़े अनेक क्षेत्रों को छू रहे हैं जिसका मानव जीवन में अनेक घनिष्ठ संबंध है। शिक्षा का जैसे–जैसे विकल्प हुआ है। वैसे–वैसे मनुष्य समाज की नवीन आवश्यकता की और चुनौतियां के प्रति उसका संबंध विकसित होता गया है। इसी आवश्यकता की एक अभिव्यक्ति पर्यावरण के प्रति जागरुकता उसे एक गुण है।

शिक्षा उस अंतिम सच्चाई को ढूंढना है, जो हमें मिट्टी के जीवन बंधनों से छुटकारा दिलाएं और हमें धन दे वस्तुओं का नहीं बल्कि आंतरिक रोशन का शक्ति का नहीं बल्कि प्यार का ताकि हम इस सच्चाई को जान सके और इसे अपने जीवन में कार्यान्वित कर सकें। – रविन्द्रनाथ टैगौर (1905)

### पर्यावरण

मानव जीवन के आसपास का वातावरण पर्यावरण कहलाता है। मानव जन्म से मृत्यु पर्यन्त पर्यावरण में ही रहता है, इसी से वह सामाजिक एवं वैयक्तिक क्षेत्रों में विकास करता है। यदि व्यक्ति को एक अच्छा वातावरण नहीं दिया जाए तो वह स्वस्थ नागरिक नहीं बन सकता है। व्यक्ति को चारों ओर से ढकने वाला आवरण ही पर्यावरण कहलाता है। इसके अभाव में जीवन ही असंभव है। पर्यावरण या वातावरण का बाह्य शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है। – जे.एस. रॉस

### पर्यावरण शिक्षा का अर्थ

- पर्यावरण उन सभी बाहरी शक्तियों एवं प्रभावों का वर्णन करता है, जो प्राणी जगत के जीवन स्वभाव व्यवहार विकास और परिपक्वता को प्रभावित करता है। – डगसल एवं रोमन हालैण्ड
- पर्यावरण तत्व का अभिप्रायः उन सभी बाहरी शक्तियां और से है जो आजीवन प्रभावित करते हैं। – वूडवर्थ

- पर्यारण की सीमा में आते हैं। सांस्कृतिक मूल्य आदते विश्वास, धैर्य, शिक्षा, व्यवसाय, जीवन एवं राजनीतिक स्थितियां आदि सभी मानव पर्यावरण के स्त्रोत हैं।

**पर्यावरण जागरुकता**

आज पर्यावरण प्रदूषण विश्वव्यापी ज्वलंत समस्या है। इस समस्या से उबरने के लिए हर आयु वर्ग के सभी पुरुष महिला वर्ग में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक संचेतना का होना अनिवार्य है। छात्र, छात्राओं, किशोंरो, किशोरियों में उच्च स्तरीय पर्यावरणीय रुझान विकसित करना समय की आवश्यकता है।

पर्यावरण शिक्षा व पर्यावरण जागरुकता को एक ही अर्थ में प्रयुक्त करते हैं। परन्तु इनमें सार्थक अंतर है पर्यावरण जागरुकता पर परिवेश भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ग्रामीण किशोंरों में पर्यावरण जागरुकता शहरी किशोंरो के बजाय कम होती है। शहरों में पर्यावरण प्रदूषण अधिक होने से नगरीय जनसंख्या इसकी दुष्परिणाम को भुगत रही है उम्हें औद्योगिक कारखानें की चिमनी तथा स्वचलित वाहनों से निरंतर निकलने वाला धुंआ में सांस लेना पड़ता है। शहरों में पर्यावरण प्रदूषण के अन्य भी खतरे हैं। अतः शहरों में बसे लोग पर्यावरण आपदाओं के सहजता से शिकार हो जाते हैं।

अभिवृद्धि और विकास से है जो किसी विशेष प्रकार के व्यवहार को सीखने के पहले आवश्यक होता है। परिपक्वता एक शब्द के रूप में साधारणतयः दो अर्थों में प्रयोगकी जाती है। प्रथमतः उस बर्ताव के सम्बन्ध में जो परिपक्वता के आदर्श एवं उसकी उम्मीद को अनुकूल बनाता है। और द्वितीय उस बर्ताव के सम्बन्ध में जा निरीक्षण तहत व्यक्ति की उम्र के लिए उचित है। मनोवैज्ञानिक साधारणता परिपक्वता को द्वितीय अर्थ में प्रयुक्त करते हैं।

**सामाजिक परिपक्वता**

विकास एक बहुमुखी प्रक्रिया है इसमें बहुत सी बातों का समावेश होता है। विकास के क्रम के बालक का बौद्धिक पक्ष ही नहीं शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। विकास के यह सभी पक्ष परस्पर सम्बन्धित हैं। परिपक्वता की ओर अग्रसर और विकास करता हुआ बालक न केवल शारीरिक बौद्धिक और संवेगात्मक व्यवहार में बल्कि सामाजिक रूप से भी उन्नति करता है। सामाजिक विकास के फलस्वरूप उसे सामाजिकता की थाती प्राप्त होती है। समाजिकता व्यक्ति के व्यवहार को सकारात्मक एवं नकारात्मक स्वीकृत के साथ अदल–बदल कर प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। जो कुछ चीजों को स्वीकृत एवं कुछ अन्य चीजों की अस्वीकृत को आगे ले जाती है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व पर सामाजिक समूह, औपचारिकता, अनौपचारिकता के प्रभाव को महत्व देता है।

सामाजिक उन्नति का तात्पर्य लाभ या सामाजिक अपेक्षानुसार बर्ताव करने की योग्यता से है। इसको इस प्रकार प्रभावित किया गया है, ''वह प्रक्रिया जिसके द्वारा वृहद श्रेणी के साथ जन्मा व्यक्ति वास्तविक बर्ताव का मार्ग दिखलाता है जो कि बहुत ही सकरी श्रेणी के अन्दर सीमित है। वह श्रेणी जो व्यक्ति के समुदाय के आदर्शों के अनुसार इसके लिए प्रथागत और स्वीकार करने के योग्य है।''[12]

12 द्विवेदी दीपाली, अ स्टडी ऑफ कोरिलेशन बेटवीन सेल्फ कान्फीडेन्स एण्ड सोशल मैच्योरिटी ऑफ मेल एण्ड फीमेल स्टूडेन्ट आफ साइंस एण्ड आर्ट फेकल्टीस, 2006 एम0 फिल0पृ0सं0 [8–7]

हरलॉक के मतानुसार ''सामाजिक उन्नति का तात्पर्य सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता का प्राप्त करना है। जिसका अर्थ समूह के आदर्शों नैतिकता एवं परम्पराओं के अनुकूल बनाने की प्रक्रिया को सीखना है। और एकता के विचार अन्तः संचार और सहयोग को मन में रखना है। यह बर्ताव के नये तरीकों की उन्नति रुचि में बदलाव और नये मित्रों के चुनाव को शामिल करता है। सामाजिक व्यक्ति वह जो न केवल लोगों के साथ रहता है बल्कि उनके साथ कार्य करना चाहता है।''[13]

1– रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर पड़ने वाले प्रभाव अध्ययन करना।

**अध्ययन की परिकल्पनाएं**

1. रायपुर जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का उनकी सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
2. रायपुर जिले के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का उनकी सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

**शोधकार्य के कार्यकाल के दौरान प्रस्तावित पद्धतिः**

**अनुसंधान विधि**

इस अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

**जनसंख्या**

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया है।

**न्यादर्श**

व्यावहारिक तथा सामाजिक विषयों के शोध में न्यादर्श का विशेष महत्व होता है। इसका बिना शोध कार्य को पूरा नहीं किया जा सकता है। जब किसी जनसंख्या में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछ इकाईयों को न्यादर्शन तथा चुनी हुई इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं।

गुड तथा हॉट के अनुसार :– ''एक प्रतिदर्श जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है एक विस्तृत समूह का एक लघु प्रतिनिधि है।''

बोगार्डस के अनुसार :– प्रतिदर्श एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार इकाईयों के एक समूह में से निश्चित प्रतिशत में इकाईयों का चयन हे। प्रतिदर्श का चयन स्तरीत याद्धच्छिक प्रतिदर्श आधार पर सम्पन्न किया गया है।

**क्षेत्र और परिसीमा**

शोध के उद्देश्य की पूर्ति के लिए रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है, तथा इन विद्यालयों में से 1000 विद्यार्थी जिनमें से 500–500 छात्र–छात्राएं है। जिनके द्वारा रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का उनकी सामाजिक परिपक्वता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' किया जा सके।

**उपकरण**

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संकलन के लिए

01 डा0 प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित मापनी का चयन पर्यावरणीय अध्ययन हेतु किया गया है।

02 डा0 आर0पी0 श्रीवास्तव, सोशल मेच्योरिटी स्केल (मैनुअल) मापनी का चयन किया गया है।

**सांख्यिकी विधि :** सांख्यिकी अनुसंधान का मूल आधार हैं । परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण किया जायेगा इस हेतु आवश्यक सांख्यिकी जैसे – मध्यमान, ज परिक्षण ।छव्ट। एवं सहसंबंध गुणांक आदि का प्रयोग शोधकर्त्ता द्वारा किया जायेगा ।

| शासकीय विद्यालय | छात्रों की संख्या | मध्यमान | प्रामाणिक विचलन | स्वतंत्रता के अंश | ज का मान |
|---|---|---|---|---|---|
| पर्यावरणीय जागरूकता | 500 | 44.04 | 4.84 | 499 | 1.64 |
| सामाजिक परिपक्वता | 500 | 94.80 | 11.84 | 499 | |

उपयुक्त सरणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है की छात्र का पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 44.37 तथा प्रामाणिक विचलन 4.54 प्राप्त हुआ। सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 94ण्40 तथा प्रामाणिक विचलन 11.78 प्राप्त हुआ।

टी का मान 1.64 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

(DF =998 $p$<0.05) की पुष्टि करता है की शासकीय छात्र एवं शासकीय छात्राओं में पर्यावरणीय जागरूकता सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अंत यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

| आशासकीय विद्यालय | छात्रों की संख्या | मध्यमान | प्रामाणिक विचलन | स्वतंत्रता के अंश | ज का मान |
|---|---|---|---|---|---|
| पर्यावरणीय जागरूकता | 500 | 44.15 | 5.04 | 499 | 1.64 |
| सामाजिक परिपक्वता | 500 | 93.97 | 11.71 | 499 | |

उपयुक्त सरणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है की छात्र का पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 44.37 तथा प्रामाणिक विचलन 4.54 प्राप्त हुआ। सामाजिक परिपक्वता का मध्यमान 94.40 तथा प्रामाणिक विचलन 11.78 प्राप्त हुआ।

टी का मान 1.64 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

(DF =998 $p$<0.05) की पुष्टि करता है की शासकीय छात्र एवं शासकीय छात्राओं में पर्यावरणीय जागरूकता सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अंत यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

## सुझाव

1. विद्यालय के आसपास का वातावरण स्वच्छ रखा गया और शिक्षकों के साथ छात्रों को भी अभिप्रेरित किया जाना चाहिए।
2. छात्रों को पर्यावरण के महत्व और उसके प्रभाव के संबंध में जानकारी प्रदान किया जाना चाहिए।
3. कल–कारखानों से होने वाले प्रदुषण के लिए उचित व्यवस्था की गई है।
4. शासन द्वारा पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले कारको पर प्रतिबंध लगाना चाहिए।
5. छात्रों को पर्यावरण के महत्व और उसके प्रभाव के संबंध में जानकारी दी जानी चाहिए।
6. छात्रों को सामाजिक परिपक्वता का विकास हो ऐसे पाठ्यक्रम एवं कार्यक्रम स्कूल द्वारा संचालित किया जाना चाहिए।
7. सामाजिक परिपक्तवता का महत्व आज के समय में प्रासंगिक है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अस्थाना एवं अस्थाना, (2005), "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन", पुस्तक मंदिर, आगरा – 2, पृष्ठ 423–439, 201–210.
2. कपिल, एच.के.1998 सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा। पृष्ठ 35–93।
3. कपिल, एच.के. 1998 अनुसंधान विधियां, हरप्रसाद भार्गव, आगरा। पृष्ठ 20–113,।
4. कुम्भकार, शिवराय 1993 एम.एड. लघु शोध प्रबंध +2 स्तर 12वीं पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की पर्यावरण प्रदूषण संबंधी अभिक्षमता तथा पर्यावरण संरक्षण में उनके प्रभाव का अध्ययन। पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर। पृष्ठ 1–28।
5. गैरेट हेनरी ई. (1987),"शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना, पेज नं.160.।
6. द्विवेदी दीपाली, अ स्टडी ऑफ कोरिलेशन बेटवीन सेल्फ कान्फीडेन्स एण्ड सोशल मैच्योरिटी ऑफ मेल एण्ड फीमेल स्टूडेन्ट आफ साइंस एण्ड आर्ट फेकल्टीस, 2006 एम0फिल0 पृ0सं0 8–7।
7. पचौरी, डॉ गिरीश (2008) "शिक्षा के मनोविज्ञान आधार" प्रकाशक– विनय रखेजा आर.लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज, मेरठ – 250001 पृष्ठ 65–83, 116–124, 239–243।
8. पाठक पी.डी. (2006),"शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा – 2, पेज नं.. 136–138 196।
9. पाण्डेय, डॉ. रामसकल, पाठक,पी.डी. (2005–06) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर आगरा –2, पृष्ठ 58।
10. पाण्डया, शकुन्तला, ''विद्यालयों में नैतिक शिक्षा की प्रेरक विधाएँ'' राजस्थान प्रकाशन जयपुर, 1994, पृ0136।
11. भार्गव, महेश, '' आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन '' हर प्रसाद भार्गव, शैक्षिक प्रकाशन, 1/230, कचहरी घाट, आगरा, 1992।
12. भटनागर, संजय, ''भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास'', आर0एल0लाल बुक डिपो, पेज नं0 382, 383, 384, 385–2005।
13. माथुर, डॉ. एस.एस (2009) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2, पृष्ठ 60।
14. मिश्र, आनन्द, '' भारतीय षिक्षा के प्रवर्तक'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, कानपुर।
15. मिश्रा, डी0सी0, '' भारत में शैक्षिक पद्धति का विकास'', अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर।
16. मिश्र, श्रीकान्त, '' नैतिक शिक्षा के प्रति शिक्षकों, छात्रों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति एवं उनकी धर्म निरपेक्ष नैतिकता का अध्ययन'' पी–एच0डी0 काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 1992, पृ0 129।
17. मुखर्जी, रविन्द्र नाथ, ''भारतीय सामाजिक संस्थाएं'' विवेक प्रकाशन, यू0ए0 जवाहर नगर दिल्ली, 1983।
18. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, अनुच्छेद 84, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार (शिक्षा विभाग),नई दिल्ली 1986।177
19. रूहेसा, एस0पी0, '' भारतीय शिक्षा का समाज शास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1992।
20. राय पारसनाथ, (1978), "अनुसंधान का परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पेज नं. – 28.।
21. वर्मा, श्रीवास्तव (2007, 2008) "आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान", प्रकाशक– अग्रवाल पाब्लिकेशन निर्भय नगर, गैलाना रोड आगरा – 7 पृष्ठ 490–506–, 523–531।
22. व्यास, हरिश्चन्द्र, ''नैतिक शिक्षा का पहला आयाम'' भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0 1993।
23. शर्मा, आर.ए. (2008) "शिक्षा अनुसंधान" प्रकाशक– विनय रखेजा, आर.लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज, मेरठ – 250001 पृष्ठ 1–28, 29–53,।

24. शर्मा आर. ए. (2013), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया", आर.लाल. बुक डिपो, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ, पेज नं. 2, 4.।
25. शेट्ये, प्रतिभा 1997 एम.एड. लघु शोध–प्रबंध, विषय माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरणीय अभिक्षमता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं वैज्ञानिक अभिक्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर।
26. सरीन एवं सरीन (2012) ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'' अग्रवाल पब्लिकेशन
27. सिंह, पी0 ''सामाजिक मूल्यों का अवरोपण'', भारतय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 20, अंक –1, 2001।
28. सिह, कुमार अरूण (2001) "शिक्षा मनोविज्ञान", भारती भवन पाब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृष्ठ 196–214।
29. सिंह, अरूण कुमार (1998) "शिक्षा के सामाजिक मनोविज्ञान", वाल्यूम–2, पृ. 707–731।
30. श्रीवास्तव, एस0एस0, ''विभिन्न अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के जीवन मूल्य'', भारतीय शोध पत्रिका, वर्ष–1, अंक –1, 1982।
31. श्रीवास्तव, सरिता, ''भारत में शिक्षा का विकास'' साहित्य प्रकाशन आगरा, पेज नं0 217 – 222, 2012। 178।
32. त्रिपाठी, लाल बचन, (2008) "आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान", प्रकाशक– एच.पी. भार्गव बुक हाउस, 4/230, कचहरी घाट, आगरा 282004 पृष्ठ 327–360।